14-07-2023

चीनी उद्योग को हरित ऊर्जा से परे भी देखना होगा

डीटीएनएन

उद्घाटन सत्र के दौरान, आर एल तमक, अध्यक्ष, यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने, वर्तमान परिदृश्य में जबकि चीनी उद्योग एक बहु-उत्पाद उद्योग बन गया है, नियमित रूप से ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान विचारों के आदान-प्रदान से समस्याओं का निवारण करने एवं चीनी उद्योग को सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी, उन्होंने कहा । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने अपनी प्रस्तुति में गन्ना आधारित उद्योग में विद्यमान अपार संभावनाओं पर चर्चा की। हमें चीनी और हरित ऊर्जा से परे भी देखना होगा, क्योंकि चीनी उद्योग के सह उत्पाद और यहां तक कि अपशिष्ट भी कई मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन की संभावनाएं प्रदान करते हैं। ऐसे कई मूल्यवर्धित जैव-उत्पादों के उत्पादन के लिए, चीनी उद्योग अन्य उद्योगों के साथ एकीकृत हो सकता है, एमएसएमई को सम्मिलित कर सकता है और स्टार्ट अप को प्रोत्साहित कर सकता है, जो चीनी उद्योग को आर्थिक रूप से मज़बूत बनाने के साथ-साथ नए निवेश, रोजगार के अवसर और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं, उन्होंने ज़ोर देकर कहा ।कृष्ण कुमार, (सेवानिवृत्त), पूर्व अपर मुख्य सचिव, हरियाणा ने इकाई की उत्पादकता बढ़ाने के लिए ऽसंगठन में नैतिकता और मूल्यऽ पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। इसकी शुरूआत ऊपर के प्रबंधतंत्र के स्तर से होती है और धीरे-धीरे यह नीचे तक फैलती है। अधिकारियों को उपलब्ध मानवशक्ति के बीच सामंजस्य पर अधिकाधिक ध्यान देने के साथ अनुशासन, समर्पण और सक्रियता का उदाहरण स्थापित करना चाहिए, उन्होंने कहा। डॉ.एच.एस.जाट, निदेशक, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेज़ रिसर्च, लुधियाना ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। इस तथ्य को देखते हुए कि मक्के को सिंचाई के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है और एक वर्ष में दो फसलें ली जा सकती हैं, यह भविष्य में इथेनॉल उत्पादन के लिए एक अच्छी संभावना वाली फसल हो सकती है, जब देश 2025 तक अनाज से लगभग 5000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन करना चाहता है। डॉ. एस. वी. पाटिल, सलाहकार ने गन्ने के रस और शीरे या अनाज पर काम करने वाली ड्यूल फ़ीड स्टॉक आधारित इथेनॉल इकाइयों के महत्व पर चर्चा की। डिस्टिलरीज़ के पूरे वर्ष संचालन को सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार की इकाइयों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है, क्योंकि चीनी मिलें लगभग पांच महीने ही संचालित होती हैं और इसलिए चीनी मिलों द्वारा कच्चा माल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध कराया जाना संभव है। कार्यक्रम का संयोजन विनय कुमार, सहायक आचार्य, शर्करा अभियांत्रिकी ने किया।

श्री आर एल तामक | प्रोफेसर नरेंद्र मोहन | डॉ. एस. वी. पाटिल | डॉ. एच. एस. जाट

- आज राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में द्यएक्ज़क्यूटिव डवलैपमेंट प्रोग्राम" का शुभारम्भ
- इंडोनेशिया, पाकिस्तान और युगांडा के 15 अधिकारियों, शर्करा संबद्ध उद्योग के 150 वरिष्ठ अधिकारी भाग ले रहे

एनएसआई में एग्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम का भव्य उद्घाटन

- इंडोनेशिया पाकिस्तान एवं युगांडा के वरिष्ठ अधिकारियों ने
- एथेनॉल के उत्पादन को बढ़ाने पर रखें अपने अपने विचार

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में बुधवार को एग्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम का उद्घाटन पूरे विधि विधान के साथ किया गया । उद्घाटन सत्र के दौरान इंडोनेशिया, पाकिस्तान तथा युगांडा के आए 15 वरिष्ठ अधिकारियों ने शिरकत की ,जबकि शुगर इंस्टिट्यूट से जुड़े करीब 150 अफसरों ने इस प्रोग्राम में हिस्सा लिया । यूपी शुगर एसोसिएशन के अध्यक्ष आर एल तमक ने नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट के निदेशक नरेंद्र मोहन की तारीफ करते हुए कहा कि चीनी उद्योग दिन प्रतिदिन जिस प्रगति से आगे बढ़ रहा है उसका पूरा श्रेय नरेंद्र मोहन जैसे अधिकारी पर जाता है । चीनी उद्योग को बढ़ाने के लिए नरेंद्र मोहन अथक प्रयास कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे उनकी मेहनत का ही नतीजा है आज देश की चीनी पूरे विश्व में उसका बोलबाला है । उन्होंने कहा विदेशों से छात्र-छात्राएं यहां आकर पढ़ाई कर रहे हैं यहां अपने लिए एक गर्व की बात है ।राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा कि चीनी उद्योग से जुड़े सभी लोगों को एथेनॉल का उत्पादन और कैसे गति से बढ़ाया जाए इस पर जोर देना होगा । हालांकि हरित ऊर्जा पर भी हमें विशेष फोकस रखना होगा ताकि कारोबार के साथ-साथ पर्यावरण को भी नुकसान ना पहुंचे । सेमिनार में मुख्य रूप से डॉ एच एस जाट, डॉ एस वी पाटिल, कृष्ण कुमार ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किए ।

श्री आर एल तामक | प्रोफेसर नरेंद्र मोहन | डॉ. एस. वी. पाटिल | डॉ. एच. एस. जाट

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में एक्जक्यूटिव डवलेपमेंट प्रोग्राम का शुभारम्भ हुआ

श्री आर एल तामक | प्रोफेसर नरेंद्र मोहन | डॉ. एस. वी. पाटिल | डॉ. एच. एस. जाट

दैनिक देश मोर्चा संवाददाता मनी वर्मा एक्जक्यूटिव डवलेपमेंट प्रोग्राम का शुभारम्भ हुआ जिसमे इंडोनेशिया पाकिस्तान और युगांडा के 15 अधिकारियों सहित शर्करा और संबद्ध उद्योग के 150 वरिष्ठ अधिकारी भाग ले रहे हैं। उद्घाटन सत्र के दौरान श्री आर एस नमक, अध्यक्ष, यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने वर्तमान परिदृश्य में जबकि चीनी उद्योग एक बहू उत्पाद उद्योग बन गया है नियमित रूप से ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर की सराहना की कार्यक्रम के दौरान विचारों के आदान-प्रदान से समस्याओं का निवारण करने एवं चीनी उद्योग को सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी, उन्होंने कहा राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने अपनी प्रस्तुति में गन्ना आधारित उद्योग में विद्यमान अपार संभावनाओं पर चर्चा की हमें चीनी और हरित ऊर्जा से परे भी देखना होगा क्योंकि चीनी उद्योग के सह उत्पाद और यहा तक कि अपशिष्ट भी कई मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन की संभावनाएं प्रदान करते है ऐसे कई मूल्यवर्धित जैव-उत्पादों के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग अन्य उद्योगों के साथ एकीकृत हो सकता है एमएसएमई को सम्मिलित कर सकता है और स्टार्ट अप को प्रोत्साहित कर सकता है, जो चीनी उद्योग को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के साथ-साथ नए निवेश रोजगार के अवसर और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं, उन्होंने जोर देकर कहा श्री कृष्ण कुमार (सेवानिवृत्त) पूर्व अपर मुख्य सचिव हरियाणा ने इकाई की उत्पादकता बढ़ाने के लिए संगठन में नैतिकता और मूल्य पर प्रतिभागियों को संबोधित किया इसकी शुरूआत ऊपर के प्रबंध के स्तर से होती है और धीरे-धीरे यह नीचे तक फैलती है। अधिकारियों को उपलब्ध मानवशक्ति के बीच सामंजस्य पर अधिकाधिक ध्यान देने के साथ अनुशासन, समर्पण और सक्रियता का उदाहरण स्थापित करना चाहिए उन्होंने कहा डॉ. एच. एस. जाट, निर्देशक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेज रिसर्च थियाना ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की इस तथ्य को देखते हुए कि मक्के को सिचाई के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है और एक वर्ष में दो फसले ली जा सकती है यह भविष्य में इथेनॉल उत्पादन के लिए एक अच्छी संभावना वाली फसल हो सकती है जब देश 2025 तक अनाज से लगभग 5000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन करना चाहता है। डॉ. एस. वी पाटिल सलाहकार ने गन्ने के रस और शीरे या अनाज पर काम करने वाली ड्युल फीडस्टॉक आधारित इथेनॉल इकाइयों के महत्व पर चर्चा की डिस्टिलरीज के पूरे वर्ष संचालन को सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार की इकाइयों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है क्योंकि चीनी मिलें लगभग पांच महीने ही संचालित होती है और इसलिए चीनी मिलों द्वारा कच्चा माल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध कराया जाना संभव

गन्ना आधारित उद्योग में विद्यमान अपार संभावनाओं पर विस्तार पूर्वक हुई चर्चा

श्री आर एल तामक | प्रोफेसर नरेंद्र मोहन | डॉ. एस. वी. पाटिल | डॉ. एच. एस. जाट

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में एक्जक्यूटिव डवलेपमेंट प्रोग्राम का शुभारम्भ हुआ, जिसमें इंडोनेशिया, पाकिस्तान और युगांडा के 15 अधिकारियों सहित शर्करा और संबद्ध उद्योग के 150 वरिष्ठ अधिकारी भाग ले रहे हैं।

उद्घाटन सत्र के दौरान, श्री आर एल तमक, अध्यक्ष, यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने, वर्तमान परिदृश्य में जबकि चीनी उद्योग एक बहु-उत्पाद उद्योग बन गया है, नियमित रूप से ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर की सराहना की । कार्यक्रम के दौरान विचारों के आदान-प्रदान से समस्याओं का निवारण करने एवं चीनी उद्योग को सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी, उन्होंने कहा ।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने अपनी प्रस्तुति में गन्ना आधारित उद्योग में विद्यमान अपार संभावनाओं पर चर्चा की । हमें चीनी और हरित ऊर्जा से परे भी देखना होगा, क्योंकि चीनी उद्योग के सह उत्पाद और यहां तक कि अपशिष्ट भी कई मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन की संभावनाएं प्रदान करते हैं। ऐसे कई मूल्यवर्धित जैव-उत्पादों के उत्पादन के लिए, चीनी उद्योग अन्य उद्योगों के साथ एकीकृत हो सकता है, एमएसएमई को सम्मिलित कर सकता है और स्टार्ट अप को प्रोत्साहित कर सकता है, जो चीनी उद्योग को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के साथ-साथ नए निवेश, रोजगार के अवसर और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं, उन्होंने जोर देकर कहा । श्री कृष्ण कुमार, (सेवानिवृत्त), पूर्व अपर मुख्य सचिव, हरियाणा ने इकाई की उत्पादकता बढ़ाने के लिए -संगठन में नैतिकता और मूल्य- पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। इसकी शुरूआत ऊपर के प्रबंधतंत्र के स्तर से होती है और धीरे-धीरे यह नीचे तक फैलती है। अधिकारियों को, उपलब्ध मानवशक्ति के बीच सामंजस्य पर अधिकाधिक ध्यान देने के साथ अनुशासन, समर्पण और सक्रियता का उदाहरण स्थापित करना चाहिए, उन्होंने कहा।

डॉ.एच.एस.जाट, निदेशक, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेज रिसर्च, लुधियाना ने मक्का से इथेनॉल उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। इस तथ्य को देखते हुए कि मक्के को सिंचाई के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है और एक वर्ष में दो फसलें ली जा सकती हैं, यह भविष्य में इथेनॉल उत्पादन के लिए एक अच्छी संभावना वाली फसल हो सकती है, जब देश 2025 तक अनाज से लगभग 5000 मिलियन लीटर इथेनॉल का उत्पादन करना चाहता है। डॉ. एस. वी. पाटिल, सलाहकार ने गन्ने के रस और शीरे या अनाज पर काम करने वाली ड्युल फीड स्टॉक आधारित इथेनॉल इकाइयों के महत्व पर चर्चा की। डिस्टिलरीज के पूरे वर्ष संचालन को सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार की इकाइयों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है, क्योंकि चीनी मिलें लगभग पांच महीने ही संचालित होती हैं और इसलिए चीनी मिलों द्वारा कच्चा माल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध कराया जाना संभव है। कार्यक्रम का संयोजन श्री विनय कुमार, सहायक आचार्य, शर्करा अभियांत्रिकी द्वारा किया गया।

'गन्ना आधारित उद्योग में हैं अपार संभावनाएं'

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुरू हुए एक्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम में संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि गन्ना आधारित उद्योगों में अपार संभावनाएं हैं। यहां चीनी उद्योग को आर्थिक रूप से मजबूत करने पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में बुधवार से शुरू हुए एक्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम में इंडोनेशिया, पाकिस्तान और युगांडा के 15 सहित शर्करा व सम्बद्ध उद्योग के 150 वरिष्ठ अधिकारी भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष आरएल तमक ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में चीनी उद्योग एक बहु उत्पाद उद्योग बन गया है। नियमित रूप से ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने और विचारों का आदान प्रदान करने से चीनी उद्योग को सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि गन्ना आधारित उद्योगों में अपार संभावनाएं हैं। हमें चीनी और हरित ऊर्जा से परे भी देखना होगा, क्योंकि चीनी उद्योग के सह उत्पाद और यहां तक कि अपशिष्ट भी कई मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन की संभावनाएं प्रदान करते हैं। ऐसे कई मूल्यवर्धित जैव उत्पादों के उत्पादन के लिये चीनी उद्योग अन्य उद्योगों के साथ एकीकृत हो सकता है। एमएसएमई को भी इसमें शामिल किया जा सकता है और स्टार्टअप को भी प्रोत्साहित किया जा सकता है, जो चीनी उद्योग को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के साथ-साथ नये निवेश, रोजगार के अवसर और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं।

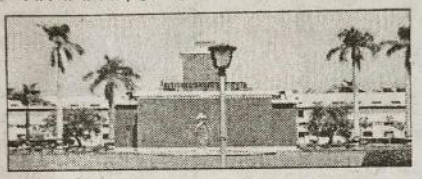

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में एक्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम

वहीं, हरियाणा के पूर्व अपर मुख्य सचिव कृष्ण कुमार ने इकाई की उत्पादकता बढ़ाने के लिये संगठन में नैतिकता और मूल्य को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि इसकी शुरुआत ऊपर के प्रबंधतंत्र के स्तर से होती है और धीरे-धीरे यह नीचे तक फैलती है।

अधिकारियों को उपलब्ध मानवशक्ति के बीच सामंजस्य पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिये। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेज रिसर्च के निदेशक डॉ. एचएस जाट ने मक्के से इथेनॉल उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि मक्का की फसल को पानी की जरूरत कम होती है और एक वर्ष में इसकी दो फसलें ली जा सकती हैं। इसे देखते हुए यह भविष्य में इथेनॉल उत्पादन के लिए एक अच्छी संभावना वाली फसल हो सकती है। कार्यक्रम का संयोजन शर्करा अभियांत्रिकी के सहायक आचार्य विनय कुमार ने किया।

गन्ने के सह उत्पादों से आय बढ़ाएं शर्करा उद्योग

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में आयोजित एग्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम में गन्ने के अपशिष्टों और सह उत्पादों से मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन करके शर्करा उद्योग को आय बढ़ाने की सलाह दी गई। वर्चुअल कार्यक्रम में देश के शर्करा उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ ही इंडोनेशिया, पाकिस्तान और युगांडा के आलाधिकारियों ने शिरकत की। देश-विदेश से कुल 168 अधिकारी जुड़े।

वक्ताओं ने कहा कि हर देश अपना अलग शुगर बिजनेस मॉडल तैयार करे। शर्करा उद्योग बहु उत्पाद उद्योग हो गया है। गन्ने की खोई, फिल्टर केक से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष आरएल तमक ने कहा कि वर्तमान में गन्ने से इथेनॉल, बिजली तथा अन्य उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि मूल्यवर्धित जैव उत्पादों के उत्पादन के लिए चीनी उद्योग अन्य उद्योगों के साथ एकीकृत हो सकता है। हरियाणा के सेवानिवृत्त अपर मुख्य सचिव कृष्ण कुमार, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मेज रिसर्च लुधियाना के डॉ. एचएस जाट, डॉ. एसवी पाटिल आदि ने विचार व्यक्त किए। संयोजन शर्करा अभियांत्रिकी के सहायक आचार्य विनय कुमार ने किया। (ब्यूरो)

निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन व अन्य।

मूल्यवर्धित उत्पादों को बढ़ावा, स्टार्टअप को करें प्रोत्साहित

(आज समाचार सेवा)

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में एक जक यूटिव डवलेपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ करते हुए निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि गन्ना आधारित उद्योग में विद्यमान अपार संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहाकि हमें चीनी और हरित ऊर्जा से परे भी देखना होगा। क्योंकि चीनी उद्योग के सह उत्पाद और यहां तक अपशिष्ट भी कई मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन की सम्भावाए प्रदान करते है। ऐसे में कई मूल्य वर्धित जैव-उत्पादों के उत्पादन के लिए, चीनी उद्योग अन्य उद्योगों के साथ एकीकृत हो सकता है। एमएसएमई को सम्मिलित कर सकता है और स्टार्ट अप को प्रोत्साहित कर सकता है। जो चीनी उद्योग को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के साथ-साथ नए निवेश, रोजगार के अवसर और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकते है। पूर्व अपर मुख्य सचिव, हरियाणा कृष्ण कुमार ने इकाई की उत्पादन पर प्रकाश डाला। निदेशक डा. एचएस जाट ने मक्का से एथेनाल उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। डा. एस.वी. पाटिल आदि ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये और महत्वपूर्ण जानकारियां दी।

Radha, each weighing around | his elder brother Sanjay Tripathi | incharge said. | Nikhlesh Prajapati (ex-student)

Immense possibilities available in sugarcane-based industry discussed

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Director, National Sugar Institute (NSI), Prof Narendra Mohan, while addressing the Executive Development Programme at the institute on Wednesday discussed the enormous possibilities available in the sugarcane-based industry. He said one had to look beyond sugar and green energy as the by-products from sugar industry and even waste offer possibilities of production of many value-added products. He said for producing many such value-added bio-products, sugar industry should integrate with other industries, involve MSMEs and encourage startups which can bring new investments, employment opportunities and strengthen rural economy besides making sugar industry viable. Addressing the programme, ex-Additional Chief Secretary Krishna Kumar, addressed the participants on 'Ethics and values in an organisation' for enhancing the productivity of the unit. He said it started from the top and percolated to the bottom and the executives should set example of discipline, dedication and proactiveness with greater focus on harmony amongst the workforce. President, UP Sugar Mills Association of India, RL Tamak, complimented the NSI for organising such programmes regularly which were very much important in the current scenario when the sugar industry had become a multi-product industry. He said such interactions will help in identifying the areas to be addressed for de-bottlenecking and making sugar industry sustainable. Another speaker Dr HS Jat, Director, Indian Institute of Maize Research, Ludhiana, who discussed various aspects of ethanol production from maize. He said looking into the fact that maize required less irrigation water, two crops can be taken in a year and it can be a potential future crop for ethanol production especially when country looked for production of about 5,000 million litre of ethanol from grains by 2025. Advisor Dr SV Patil discussed the importance of dual feed stock based ethanol units working on sugarcane juice and molasses or grains. He said such units were essentially required for ensuring round the year operation of distilleries since sugar factories operated for about five months only and hence the raw material was made available by the factories in limited quantities only. The programme was successfully conducted by Assistant Professor Vinay Kumar. The function was attended by over 150 senior executives from sugar and allied industry, including 15 from Indonesia, Pakistan and Uganda.

PARADIP PORT AUTHORITY
Short e-TENDER CALL NOTICE
TD/TM/GEN-235(Vol-VII)/23/1477, dtd. 12.07.2023
Name of the Work: "Allotment of 05 (Five) nos. of Mechanical Iron Ore/ Iron Ore Pellet plots at IOHP." License Fees : Rs.2,90,29,770/-, Wharfage Fees: Rs.18,90,620/-. Last date & time of submission of bid: 18.07.2023 up to 15:00 hrs. Date and time of opening (technical bid): 18.07.2023 up to 15:00 hrs. Refer our website for details https://eprocure.gov.in/eprocure/app & http://paradipport.gov.in/